राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन छत्तीसगढ

फरवरी २०१६

सर्व शिक्षा अभियान, छत्तीसगढ़

अंक-2

संकुल स्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु चर्चा पत्र

संपर्क हेतु ईमेल – mis.head@gmail.com

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

''आमुख''

प्रिय साथियों,

जनवरी के जाते जाते डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान प्रथम वर्ष का द्वितीय चक का निरीक्षण भी समाप्त हो रहा है। यह अभियान कुल चार वर्षों का है। प्रथम वर्ष पूर्णतः शालाओं में सीखने के वातावरण निर्माण/तैयार करने हेतु आवश्यक बुनियादी चीजों को व्यवस्थित करने हेतु फोकस किया गया था। इसको लागू किए बिना सीधे बच्चों का मूल्यांकन करना शिक्षकों एवं सिस्टम के साथ नाइंसाफी होती। परंतु यदि स्कूल इन बुनियादी प्रकियाओं को केवल अपनी स्थिति में सुधार करने, अंकों में वृद्धि करने के लिए एक दिखावे के रूप में लेंगे तो निश्चित मानिए वे न केवल इस अभियान के साथ बल्कि बच्चों के साथ न्याय नहीं कर रहे होंगे। दोनों चको के निरीक्षण के दौरान कई स्कूलों से इस बात के साक्ष्य मिल रहे है कि उन्होने अंक पाने के लिए पंजियॉ भर दी है, व्यवस्थित कर ली हैं, परन्तु बच्चों के अपेक्षित दक्षताओं में कोई सुधार नहीं हो पाया है।

यदि हम सब अपने विभाग, अपने स्कूलों में वास्तव में इस अभियान का लाभ लेकर बच्चों में कुछ सुधार लाने की दिलीइच्छा रखते हैं तो अभी भी समय है कि हम अपने–अपने संकुल, अपनी शालाओं में चीजों को व्यवस्थित कर लें।

A एवं B Grade पाए लगभग 30 प्रधानाध्यापकों के साथ एक संगोष्ठी में शामिल होने का मौका मिला। 100 बिन्दुओं में से कुछ बिन्दुओं पर उनसे जानकारी लेने का प्रयास किया, जैसे– **Teaching Plan, Print Rich** वातावरण, ग्राम शिक्षा पंजी, **SDP, PLC** आदि। किसी को भी किसी भी बिन्दु पर कोई स्पष्टता नहीं। यह स्थिति खतरनाक है। एक बार **A एवं B Grade** के शिक्षकों को भी 100 बिन्दु अनुसार संकुल स्तर से व्यवस्थित कर लने से आगामी वर्ष के लिए सभी एक साथ तैयार हो सकेंगे।

इसी प्रकार एक प्रधानाध्यापिका द्वारा आंखों में आंसू के साथ अपना दुख प्रकट किया गया कि उनके ग्राम सभा के नोडल अधिकारी द्वारा ग्राम सभा से चर्चा किए बिना ही उन्हें अंक दे दिया गया जिससे उनकी शालाओं को अपेक्षित ग्रेड नहीं मिल पाया। यह स्थिति आगे नहीं आनो चाहिए, इस बात का हम सबको मिलकर ध्यान रखना होगा।

आशा है कि आगामी वर्ष के लिए इस अभियान का चक प्रारंभ होने से पहले आप सभी अपने संकुल के समस्त शालाओं में 100 बिन्दुओं में वर्णित अपेक्षित गतिविधियों के अनुरूप शालाओं में वास्तव में सुधार ला पाएंगे ताकि उन सभी घटको के सहयोग से सभी बच्चों की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार परिलक्षित हा सके।

एजेंडा क्र. 1 गुणवत्ता सुधार हेतु संकुल स्तर पर माइक्रोप्लानिंग

शाला निरीक्षण के दौरान उपयोग में लाए गए चेकलिस्ट वास्तव में आपके शाला सुधार के लिए दिशा–निर्देशक साबित हो सकते हैं। आपको बस यह ध्यान में रखना होगा कि इस चेकलिस्ट में वर्णित बिन्दु का बच्चों की उपलब्धि से क्या संबंध हैं। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान में शालाओं के निरीक्षण हेतु तैयार चेकलिस्ट के 100 बिन्दुओं को हमने निम्नानुसार 15 बिन्दुओं में समेटने का प्रयास किया है :–

1. **Village/Ward education register** को बनाकर आपको देखना होगा कि गांव के कितने बच्च सरकारी स्कूल में हं और कितने अन्य स्कूलों में जा रहे है। इसके अलावा कितन अभी भी OOSC हैं। अब आपको अपने स्कूल की गुणवत्ता ऐसी बढ़ानी होगी कि पालक बच्चों को निजी स्कूल से हटाकर वापस सरकारी स्कूलों की ओर भेजने लगें।
2. बच्चों एवं शिक्षकों की नियमित उपस्थिति पर ध्यान देने से ही बच्चों को पढ़ने–सीखने का समय मिल सकेगा। SMC को भी इन मुद्दों पर ध्यान देने से अनुपस्थिति में कमी आ सकेगी।
3. SMC की बैठकों में मुख्य रूप से बच्चों की पढाई पर चर्चा होनी चाहिए। गांव वाले बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देने लगेंगे तो सभी सीखने–सिखाने में ध्यान देंगे और सरकारी स्कूल भी असरकारी प्रदर्शन कर सकेंगे।
4. सभी शालाओं को व्यावहारिक योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन करना चाहिए। केवल कागज पर योजना बनाने का कोई अर्थ नहीं है।
5. शिक्षक यदि बच्चों से अच्छा व्यवहार करते हैं तो बच्चे पढ़ाई में रूचि लेते हैं, सीखत हैं और शाला त्याग की समस्या नहीं रहती। अच्छे माहौल में बच्चे शिक्षकों से अपनी शंकाओं का भी समाधान आसानी से कर लेते हैं।
6. शिक्षक यदि पालकों के संपर्क में रहें, उनसे बच्चों की प्रगति के बारे में नियमित जानकारी दें तो पालक विशेषकर माताएँ अपने बच्चों की पढ़ाई की ओर घर पर भी ध्यान देने लगते हैं। इसलिए माताओं का उन्मुखीकरण अत्यंत आवश्यक हैं।
7. आजकल एक–दूसरे से सीखने एवं समूह में बैठकर कार्य करने पर जोर दिया जाता है। बैठक व्यवस्था में भी नियमित रूप से बदलाव लाने के साथ–साथ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सभी के साथ मिलाकर सिखाने की दक्षता शिक्षकों को आनी चाहिए।
8. प्रधानाध्यापकों में नेतृत्व के गुण होने पर वे आसानी से बदलाव लाने में सफल हो सकते हैं। प्रधानाध्यापक प्रत्येक बच्चों की प्रगति पर चर्चा, दैनन्दिनी की जांच एवं सुधार

और शिक्षकों को एक–दूसरे से सीखने के लिए वातावरण बनाने में सहयोग करें व प्रेरणादायी नेतृत्व प्रदान करें तो गुणवत्ता सुधार करना आसान हो जाता है।

9. शिक्षकों द्वारा प्रश्न निर्माण, पाठ्यपुस्तकों के अलावा अतिरिक्त सामग्री का उपयोग, शाला परिसर को आकर्षक बनाने, साफ–सुथरे श्यामपट का उपयोग के साथ–साथ प्रत्येक कक्षा के सामने अधिगम सूचकांकों के प्रदर्शन से शाला में सीखने–सिखाने का एक बेहतर माहौल बनता है।
10. शालाओं में प्रिंटरिच वातावरण अर्थात चारों ओर कुछ शब्द वाक्य लिखे हो तो बच्चों के पढ़ने का माहौल बनता है। इसी प्रकार **Wall Magazine,** पुस्कालय का उपयोग, **Reading/Math Corner** होने से सीखना आसान हो जाता है।
11. बच्चों को उनकी कक्षानुसार सभी विषयों जैसे भाषा, गणित एवं विज्ञान में अपेक्षित दक्षताएँ आना आवश्यक है। शिक्षकों को इसके लिए योजनाबद्ध रूप से इकाई योजना बनाकर काम करना चाहिए।
12. कक्षाओं में गतिविधि आधारित शिक्षण प्रयोगों के माध्यम से सीखने पर जोर, अभिव्यक्ति कौशल विकास एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी दिए जाने पर भी जोर होना चाहिए।
13. शिक्षकों को सभी बच्चों के बारे में जानकारी होनी चाहिए एवं सभी बच्चों को अच्छा कार्य करने हेतु नियमित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार बच्चों के साथ अलग से भी कार्य कर उनमें सुधार लाया जा सकता हैं।
14. स्वच्छता पर ध्यान देने से बीमारी से दूर रह सकेंगे और उपस्थिति में भी वृद्धि होगी।
15. शालाओं में सतत निगरानी के लिए निगरानी व्यवस्था में भी सुधार अत्यंत आवश्यक है। संकुल समन्वयकों को भी शालाओं में सुधार हेतु मार्गदर्शन एवं समर्थन करते रहना चाहिए। संकुल की सभी शालाओं को ऐसे बनाया जाना चाहिए जिससे वे एक दूसरे के लिए प्रेरणा देने का काम कर सकें। उच्च कार्यालय को भी लगातार एक्शन लेने की आवश्यकता है।

अब सभी संकुल समन्वयकों की जिम्मेदारी होगी कि डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के दूसरे वर्ष की शुरूआती चरण के पहले हम उपरोक्तानुसार सभी बिन्दुओं को शाला की दिनचर्या, आदत में सही अर्थो में ले आएँ। यह केवल नंबर बढ़ाने हेतु कागजी खानपूर्ति वाला गेम बनकर न रह जाए, क्योंकि द्वितीय वर्ष में प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक बच्चे की अकादमिक दक्षताओं की विस्तार से जांच की जाएगी और हमारा लक्ष्य होगा 90 प्रतिशत बच्चों को अपेक्षित दक्षताएँ ला पाने की स्थिति में प्रत्येक शाला का होना। इसके लिए यह आवश्यक होगा कि सीखने के लिए संतोषप्रद वातावरण एवं **Putting System Place** अच्छे से हो जाए।

संकुल समन्वयक सभी शालाओं के शिक्षकों के साथ अलग–अलग बैठकर एक माइक्रो प्लानिंग कर लेवें। इस हेतु निम्नलिखित प्रकिया अपनाई जाए ताकि अपेक्षित सभी चीजें प्रथम वर्ष के अंत तक आ जाएँ :–

1. शाला के प्रथम चक्र एवं द्वितीय चक्र के निरीक्षण में अंतर।
2. शालावार अभी भी कौन–कौन से क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है?
3. A एवं B Grade School में भी ये सभी बिन्दु आ जाए, इसके लिए क्या उपाय करेंगे?
4. सभी बच्चे कक्षानुरूप सीख सकें, इसके लिए कार्यवाहियाँ।
5. सभी 100 बिन्दुओं पर नियमित किस प्रकार स कार्यवाही करना होगा।

एजेंडा क्र.–2 शाला विकास योजना

सभी शालाओं को अपने पास उपलब्ध संसाधनों, स्रोतों एवं समुदाय की अपेक्षाओं/आकांक्षाओं के आधार पर आगामी तीन वर्षों के लिए अपनी शाला विकास योजना तैयार करनी होती है। शाला को यह योजना अपने वास्तविक परिस्थितियों एवं यथार्थ को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों, पालकों, बच्चों एवं समुदाय के साथ मिलकर बनानी चाहिए।

सर्वप्रथम सभी के साथ बैठकर निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा करें:–

1. शाला में उपलब्ध विभिन्न संसाधन – भौतिक एवं वित्तीय
2. शाला में आवश्यक संसाधन – भौतिक एवं वित्तीय
3. शाला में आवश्यक प्रकियागत सुधार के क्षेत्र – भौतिक एवं वित्तीय
4. शाला में कक्षा अध्यापन में सहयोग देने हेतु कम से कम पांच सदस्य (सेवानिवृत्त/शिक्षा में रूचि लेने वाले/बेरोजगार युवा)
5. शाला में शिक्षक/बच्चों की उपस्थिति पर सतत् निगरानी रखने हेतु जिम्मेदारी – (कम से कम पांच सदस्य)
6. शाला में बच्चों के कार्यों/शिक्षकों के अध्यापन/कक्षा अवलोकन/कापियों की जांच के अवलोकन हेतु जिम्मेदारी (कम से कम पांच सदस्य)
7. वर्षवार किए जाने हेतु कम से गतिविधियाँ:–

उपरोक्तानुसार बैठक में चर्चा एवं गहन मंथन कर अपने शाला के लिए योजना तैयार की जानी होगी। सुझावात्मक प्रारूप इस प्रकार हो सकता है।

क्रं.	गतिविधि/लक्ष्य	जिम्मेदारी	संसाधन सहयोग	समय–सीमा	टीप

एजेंडा क्र.—3 नवाचार "चलित हाथ धुलाई खंड (Mobile Hand Wash Slab)"

विशेषता व उपयोग - जिसे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनो व युवाओं के हुनर व सहयोग से निर्मित की गई पेयजल उपलब्धता सुनिश्चितिकरण व हाथ धुलाई हेतु आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य, वजन मे हल्की, न्यून संसाधन व लागत से निर्मित, सीमित स्थान घेरने वाली, किचन गार्डन मे सिचाई यंत्र के रूप मे उपयोगी खंड है।

संरचना - इस उपकरण के प्रमुख रूप से दो भाग हैं जिसमे प्रथम भाग - पानी संग्राहक टंकी जिसके नीचे मे जल प्रवाह नियंत्रण हेतु एक ईंची PVC पाईप मे टोंटी (पानी प्रवाह खोलने व बंद करने हेतु) लगा हुआ है।

द्वितीय भाग - एक स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पुराने टूटे डेस्क-बैंच से प्राप्त हल्के लोहे के एंगल को वेल्डिंग कराकर बनाया गया (साईज ७ फीट लम्बा×२०ईंच चौड़ा×२.५ फीट उंचा फ्रेम) अथवा पुराने दो डेस्क के एंगल का फ्रेम को जाेड़कर बनाया गया उक्त साईज का फ्रेम फ्रेम के चारो कोने व ठीक मध्य मे दो कुल छः ०८-०८ ईंची लम्बा एंगल चारो कोने व मध्य मे दो लगाकर तीन २०-२० ईंची के अनुदैर्ध्य एंगल से जोड़कर तीनो अनुदैर्ध्य एंगलों के बीच मे उल्टा U आकार का क्लैम्प लगाकर ८ फीट लम्बे एक ईंची PVC पाईप के लिए उपरी फ्रेम से ८ ईंची उपर स्टैण्ड तैयार किया ।

उक्त ८ फीट लम्बे एक ईंची PVC पाईप के दोनो आेर पाईप के दोनो किनारों से १०-१० ईंची स्थान छोड़कर १.५ फीट की दूरी पर परस्पर विपरित दिशा मे ६ टेपनल हुनरमंद युवाओं से लगवाया गया।

ग्राम स्तर खपरैल घरों मे छानी के पानी को निश्चत स्थान मे गिराने हेतु पुराने या नये 'मगरा' को बीच से जोड़कर इसे एंगल के फ्रेम मे उपर मगरी के बीच के जोड़ को ठीक उपर ८ फीट लम्बे एक ईंची PVC पाईप के सीध पर लाकर स्थापित किया जिससे टेपनल से हाथ धुलाई के बाद गंदा पानी इस मगरा पर गिरे (जमीन पर नही) साथ ही इस मगरा के किसी एक कोने को दुसरे की अपेक्षा १.५ ईंची ऊंचा रखा गया ताकि हाथ धुलाई पश्चात प्राप्त गंदे पानी को इच्छित दिशा पर गिराया जा सके।

साथ फ्रेम मे पेयजल व हैण्डवाश रखने हेतु स्टैण्ड की भी व्यवस्था की गई है।

अब उपकरण के प्रथम भाग व द्वितीय भाग को एक १ ईंची लचीले पाईप से क्लैम्प की सहायता से एयरटाईट जोड़कर टंकी मे साफ स्वच्छ पानी भरकर इसे पेयजल व हाथ धुलाई खंड के रूप मे उपयोग लाया जा सकता है।

इसे ईच्छा व आवश्यकतानुसार कम स्थान पर भी इसके लचीले पाईप के क्लैम्प को खोलकर आसानी ले जाया जा सकता है। इस बारे में और इसके अलावा और भी नवाचार के लिए आप इस पते पर संपर्क कर सकते हैं:—

नितेश सिंगरौल, मो.नं. 9893091716
शिक्षक पंचायत, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मोढ़े, विकासखण्ड – तखतपुर जिला बिलासपुर छ.ग.

एजेंडा क्र.—4 शॉर्ट कट के चक्कर में पार करने लगे नदी

तिरुवनंतपुरम (केरल). यहां के मलप्पुरम जिले के एक टीचर हैं अब्दुल मलिक। अपनी नौकरी के प्रति उनकी लगन अब सुर्खियों में है। स्कूल जाने के लिए वह रोजाना 100 मीटर नदी तैरकर पार करते हैं। खास बात यह है कि 19 साल में उन्होंने एक बार भी ड्यूटी मिस नहीं की।

शॉर्ट कट के चक्कर में पार करने लगे नदी...

- 40 वर्षीय अब्दुल पडिंजत्तेमुरी में प्राइमरी टीचर हैं। वे बताते हैं, "नौकरी लगने के बाद मैं दो-तीन साल तक सड़क के रास्ते स्कूल गया। लेकिन इसमें 24 किलोमीटर ज्यादा दूरी तय करनी पड़ती थी। तीन बसें बदलनी पड़तीं और घर से भी जल्दी निकलना होता था। एक दिन सहकर्मी बापुत्ती की सलाह पर मैंने तैरकर स्कूल जाना शुरू किया। परिवार वाले कुछ डरे, लेकिन मुझे खुद पर भरोसा था। मैं कपड़े, टॉवेल और किताबें पॉलिथिन में बांधकर अपने साथ ले जाता हूं। नदी के उस पार पहुंचकर कपड़े बदल लेता हूं।'

- अब्दुल को नदी पार करते समय स्कूल के छात्र उत्सुकता से देखते थे। ऐसे में उन्होंने उनकी उत्सुकता को अभ्यास में बदलने का फैसला किया। पहले एक-दो बच्चों ने तैरना शुरू किया, आज अब्दुल कई बच्चों को तैरने की ट्रेनिंग दे रहे हैं। छात्रों का कहना है कि अब्दुल सर ने उन्हें सेहतमंद रहना भी सिखाया है। नदी से वर्षों पुराना नाता रहा तो उन्होंने इसे साफ रखने का भी फैसला किया। अब्दुल अपने छात्रों के साथ स्कूल आते-जाते नदी से कचरा-पॉलिथिन भी साफ करते हैं। लोगों को भी ऐसा करने का संदेश देते हैं।

- अब्दुल ने राजनेताओं का ध्यान भी अपनी ओर खींचा। उन्हें सम्मानित भी किया, लेकिन वे इस नदी पर पुल बना पाने में अपनी मजबूरी बताते हैं। स्थानीय पंचायत का कहना है कि इस नदी पर पहले ही तीन पुल हैं। जिस रास्ते से अब्दुल जाते हैं वहां से ज्यादा आवाजाही नहीं है। ऐसे में नया पुल बनाना फिलहाल मुमकिन नहीं है।

1000 घंटे पानी में

- 2029 में अब्दुल नौकरी से रिटायर होंगे। उनका अनुमान है कि तब तक वे करीब 1000 घंटे पानी में बिता चुके होंगे।
- 35 साल की नौकरी में करीब 700 किलोमीटर की दूरी तैर कर पार कर चुके होंगे। जो इंग्लैंड और फ्रांस के बीच इंग्लिश चैन की दूरी के बराबर होगा।
- तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता उन्हें सम्मानित कर चुकी हैं।

And you call me coloured??

Written by an African child and nominated by The United Nations as the Best Poem of 2006.

<u>And you calling me collared??</u>

When I born, I black.
When I grow up, I black.
When I go in sun, I black.
When I scared, I black.
When I sick, I black.
And when I die, I still black.

And you white people.
When you born, you pink.
When you grow up, you white.
When you go in sun, you red.
When you cold, you blue.
When you scared, you yellow.
When you sick, you green
And when you die, you grey...

And you calling me collared??

एजेंडा क्रं.–5 स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय– अवसरों का चक्र (स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय)

स्वच्छ विद्यालय के सन्दर्भ में, कृपया संलग्न चित्र का अवलोकन कर, कुछ उदाहरणों के साथ यह चर्चा करें कि निम्न बिंदु आपस में किस प्रकार से जुड़े हुए हैं |

1-) बिंदु 1- बिंदु 2 से
2-) बिंदु 2- बिंदु 3 से
3-) बिंदु 3- बिंदु 4 से
4-) बिंदु 4- बिंदु 5 से

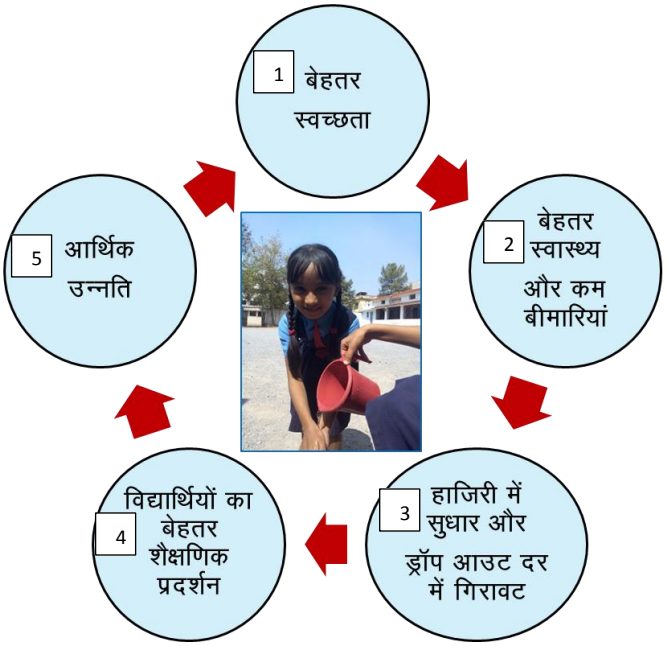

उपरोक्त चर्चा के अनुसार, **"स्वच्छ विद्यालय – अवसरों का चक्र"** के सन्दर्भ में एक आम समझ बनायी जाये |

इस बात की समीक्षा की जाये कि

- हमारे संकुल में शालायें, स्वच्छ व्यवहार को विद्यार्थियों की आदतों में ला पाने में कितना सक्षम हो पायी हैं ?
- क्या हमारी शालाओं, में उन आदतों का चिन्हांकन/ पहचान कर रखी है, जिन्हें हम सुधार लाना चाहते हैं ?
- क्या हमने इन आदतों का कोई बेस लाइन तैयार किया है, जिससे हमे पता लगे कि हम कहां तक उन्हें सुधार कर पाने में सक्षम हुए हैं ?
- क्या आपके शाला में स्वच्छता व्यवहार में उल्लेखनीय सुधार का कोई, उदाहरण है (जैसे यह सुनिश्चित किया जाना कि, किसी भी बच्चे को खाना तब तक नहीं दिया जाता है, जब तक कि वो साबुन से हाथ न धो ले.....आदि) तो राज्य कार्यालय को प्रेषित करें, तांकि अन्य शालाये भी इससे लाभान्वित हो सकें|

"मेरे सपनो का भारत "

स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस समारोह के उपलक्ष्य में "**मेरे सपनो का भारत** " विषय पर बच्चो से उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति चाही गई है । इस पर एक बुकलेट तैयार कर माननीय प्रधानमंत्री जी को भेंट किया जाना है । इस हेतु कक्षा 1 से १२ तक के बच्चो में निम्न क्षेत्रो में कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते है

- 1 स्लोगन
- 2 निबंध
- ३ पोस्टर/पेंटिंग
- 4 कविता
- 5 ड्रामा आदि
- कक्षा 1 से 8 तक के लिए निबंध २५० शब्दों में तथा 9 से 12 तक के लिए 500 शब्दों में रख सकते है ।

नोट - कृपया यह जानकारी यथाशीघ्र कार्यालय के ईमेल पर - mis.head@gmail.com में विषय में " मेरे सपनो के भारत" लिख कर भेजे.

एजेंडा क्र.–6 विज्ञान खोज चालीसा

अविष्कार दोहे में

जय न्यूटन विज्ञान के आगर, गति खोजत ते भरि गये सागर ।
ग्राहम् बेल फोन के दाता, जनसंचार के भाग्य विधाता ।
बल्ब प्रकाश खोज करि लीन्हा, मित्र एडीशन परम प्रवीना ।
बायल और चाल्स ने जाना, ताप दाब सम्बन्ध पुराना ।
नाभिक खोजि परम गतिशीला, रदरफोर्ड हैं अतिगुणशीला ।
खोज करत जब थके टामसन, तबहिं भये इलेक्ट्रान के दर्शन ।
जबहिं देखि न्यट्रोन को पाए, जेम्स चैडविक अति हरषाये ।
भेद रेडियम करत बखाना, मैडम क्यूरी परम सुजाना ।
बने कार्बनिक दैव शक्ति से, बर्जीलियस के शुद्ध कथन से ।
बनी यूरिया जब वोहलर से, सभी कार्बनिक जन्म यहीं से ।
जान डाल्टन के गूँजे स्वर, आशिंक दाब के योग बराबर ।
जय जय जय द्विचक्रवाहिनी, मैकमिलन की भुजा दाहिनी ।
सिलने हेतु शक्ति के दाता, एलियास हैं भाग्यविधाता ।
सत्य कहूँ यह सुन्दर वचना, ल्यूवेन हुक की है यह रचना ।
कोटि सहस्र गुना सब दीखे, सूक्ष्म बाल भी दण्ड सरीखे ।
देखहिं देखि कार्क के अन्दर, खोज कोशिका है अति सुन्दर ।
काया की जिससे भयी रचना, राबर्ट हुक का था यह सपना ।
टेलिस्कोप का नाम है प्यारा, मुट्ठी में ब्रम्हाण्ड है सारा ।
गैलिलियो ने ऐसा जाना, अविष्कार परम पुराना ।
विद्युत है चुम्बक की दाता, सुंदर कथन मनहिं हर्षाता ।
पर चुम्बक से विद्युत आई, ओर्स्टेड की कठिन कमाई ।
ओम नियम की कथा सुहाती, धारा विभव है समानुपाती ।
एहि सन् उद्गम करै विरोधा, लेन्ज नियम अति परम प्रबोधा ।
चुम्बक विद्युत देखि प्रसंगा, फैराडे मन उदित तरंगा ।
धारा उद्गम फिरि मन मोहे, मान निगेटिव फ्लक्स के होवे ।
जय जगदीश सबहिं को साजे, वायरलेस अब हस्त बिराजै ।
अलेक्जेंडर फ्लेमिंग आए, पैसिंलिन से घाव भराये ।
आनुवांशिकी का यह दान, कर लो मेण्डल का सम्मान ।
डा रागंजन सुनहु प्रसंगा, एक्स किरण की उज्ज्वल गंगा। मैक्स प्लांक के सुन्दर वचना, क्वाण्टम अंक उन्हीं की रचना ।
फ्रैंकलिन की अजब कहानी, देखि पतंग प्रकृति हरषानी ।
डार्विन ने यह रीति बनाई, सरल जीव से सृष्टि रचाई ।
परि प्रकाश फोटान जो धाये, आइंस्टीन देखि हरषाए ।
षष्ठ भुजा में बेंजीन आई, लगी केकुले को सुखदाई ।
देखि रेडियो मारकोनी का, मन उमंग से भरा सभी का ।
कृत्रिम जीन का तोहफा लैके, हरगोविंद खुराना आए ।
ऊर्जा की परमाणु इकाई, डॉ भाषा के मन भाई ।
थामस ग्राहम अति विख्याता, गैसों के विसरण के ज्ञाता ।
जो यह पढ़े विज्ञान चालीसा, देइ उसे विज्ञान आशीषा ।
श्री "निशीथ" अब इसके चेरा, मन मस्तिष्क में इसका डेरा ।

Awards and Honours to A. P. J. Abdul Kalam

Year of award or honour	Name of award or honour
2014	Doctor of Science
2012	Doctor of Laws (Honoris Causa)
2011	IEEE Honorary Membership
2010	Doctor of Engineering
2009	Honorary Doctorate
2009	Hoover Medal
2009	International von Kármán Wings Award
2008	Doctor of Engineering (Honoris Causa)
2007	King Charles II Medal
2007	Honorary Doctorate of Science
2000	Ramanujan Award
1998	Veer Savarkar Award
1997	Indira Gandhi Award for National Integration
1997	Bharat Ratna
1994	Distinguished Fellow
1990	Padma Vibhushan
1981	Padma Bhushan

एजेंडा क्रं. 7 Story of a butterfly

A man found a cocoon of a butterfly. One day a small opening appeared. The man sat and watched it for several hours as it struggled to force its body through that little hole. Then it seemed to stop making any progress. It appeared as if it could go no farther.

Then the man decided to help the butterfly, so he took a pair of scissors and snipped off the rest of the cocoon. The butterfly then emerged easily. But it had a swollen body and small, shrivelled wings.

The man continued to watch the butterfly, expecting that the wings would enlarge and expand and be able to support the body with time. Or, that the body would eventually shrink to match the wings.

Neither happened. The butterfly was never able to fly.

What the man did not understand, was that the restricting cocoon and the struggle required for the butterfly to get out, were nature's way of strengthening the butterfly's wings and preparing it for flight.

Sometimes, struggles are exactly what we need in our life.

If nature allowed us to go through our life without any obstacles, it would cripple us.

If we never struggle, we will never be as strong as we could have been.

यह कहानी अपने संकुल में अंग्रेजी जानने वाले शिक्षक को तैयारी के साथ सुनाने हेतु जिम्मेदारी देवें | कोकून से तितली को निकलने की मेहनत एवं तकलीफ को देखकर आदमी मदद के लिए कैंची से धीरे धीरे कोकून को काटकर तितली को बाहर निकलने में मदद करता है | पर उस तितली का क्या हश्र होता है ? वह जीवन भर के लिए दिव्यांग हो जाती है |

क्या हम अपने कक्षा में बच्चों को कुछ समस्याओं को हल करने देते हैं ? क्या हम उनके द्वारा कोशिश करने का अवसर देने के बदले सीधे हम ही सवाल हल कर उनकी मदद करने का प्रयास करते हैं ?

क्या हमें अपने बच्चों को जिन्दगी की कठिनाइयों को हल करने का अवसर नहीं देना चाहिए ?

क्या हर चीज चम्मच से उनके मुंह में डालने से वे जिन्दगी में अपने बल पर कुछ कर पाएंगे ?

संकुल में शिक्षकों के साथ इन बिन्दुओं और भी कुछ बिन्दुओं को जो आपको इस कहानी को पढ़कर महसूस हो रहा हो, पर चर्चा का आयोजन करें | यदि आपको यह बातें सही लगती हैं तो आज ही से अपने व्यवहार में, शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन लाएं |

अपने विषय में ऐसे कुछ क्षेत्रों की पहचान करें जहां बच्चों को कुछ समस्याएँ स्वयं मिल जुलकर हल करने के अवसर दिए जा सकते हैं |

छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा शालाओं में वार्षिकोत्सव (सांस्कृतिक कार्यक्रम) के आयोजन के संबंध में निम्नानुसार कुछ बातों को ध्यान रखने पर अप्रिय स्थिति से काफी हद तक बचा जा सकता है :–

1. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आमंत्रित अतिथियों के स्वागत के लिए बच्चों को काफी देर तक धूप में खड़े न किया जावे।
2. कार्यक्रम आयोजन के दौरान बच्चों के लिए उचित मात्रा में शुद्ध पेयजल, नाश्ता इत्यादि का प्रबंध हो।
3. कार्यक्रम में भाग लेने वाली बालिकाओं के लिए बालकों से अलग व सुरक्षित वस्त्र बदलने का कक्ष हो।
4. कार्यक्रम आयोजन के नाम पर स्कूल प्रबंधन द्वारा पालकों से अनावश्यक राशि वसूल न की जावे।
5. सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में बच्चों के साथ भेदभाव न किया जावे।
6. प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था हो।

कृपया उपरोक्तानुसार निर्देश शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों में प्रसारित कर आयोग को अवगत कराने का कष्ट करें।

एजेंडा :8 बच्चों व्दारा किए गए सवालों का विश्लेषण:

गत माह में चर्चा पत्र में हमने शिक्षकों की अकादमिक समस्याओं पर फोकस किया था | इस बार बच्चों व्दारा हल किए गए कुछ सवालों को आपके सामने रख रहे हैं | कृपया संकुल की बैठक में शिक्षकों के साथ मिलकर विस्तार से चर्चा करें कि ऐसा क्यों हो रहा है और ऐसी स्थिति को कैसे सुधारा जा सकता है | ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए आपको संकुल स्तर पर आपस में विचार विमर्श कर ही कुछ ठोस रणनीतियां बनानी होंगी |

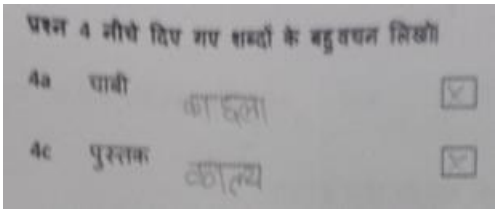

उदाहरण एक: बच्चे से चाबी का बहुवचन पूछा गया तो उसने चाबी का छल्ला लिखा है | इसी प्रकार पुस्तक के बहुवचन में उसने पुस्तकालय लिखने का प्रयास किया है | छल्ले में बहुत सी चाबियाँ उसने देखी होंगी | इसी प्रकार पुस्तकालय में भी उसने बहुत सी पुस्तकें देखी होंगी |

उदारहण दो: लिंग बदलकर लिखने वाले सवाल में बच्चे ने सवाल से ही शब्दों को लेकर इधर का उधर बदल दिया है | लिंग बदलने के स्थान पर उसने शब्दों का स्थान ही बदल दिया है | कई बार बच्चों को श्यामपट से उतारने की आदत होने के कारण वे लिखी चीज को वैसे का वैसा उतारने में ज्यादा आनंद लेते हैं | ऐसी स्थिति को कैसे सुधारें ?

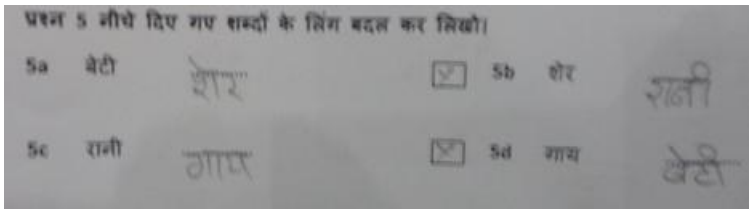

उदाहरण तीन: समूह के आधार पर कोई एक शब्द लिखने के सवाल पर बच्चों ने अपने अपने दिमाग से कुछ-कुछ लिखने का प्रयास किया है | जैसे-

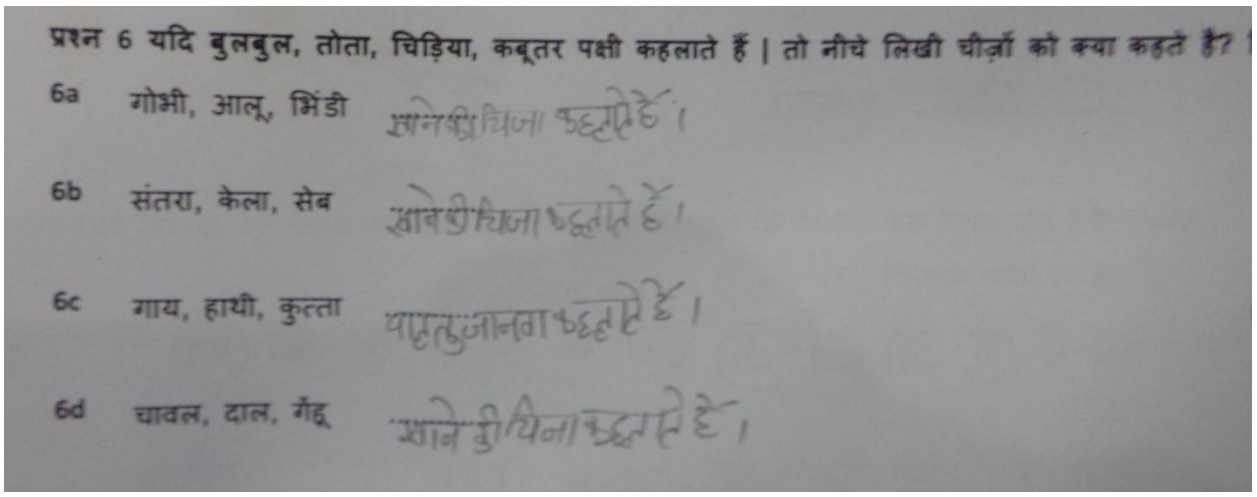

इसके अलावा कुछ लोगों ने तो केवल श्रंखला में आगे कुछ और उसी तरह के नाम जोड़ कर उत्तर देने का प्रयास किया |

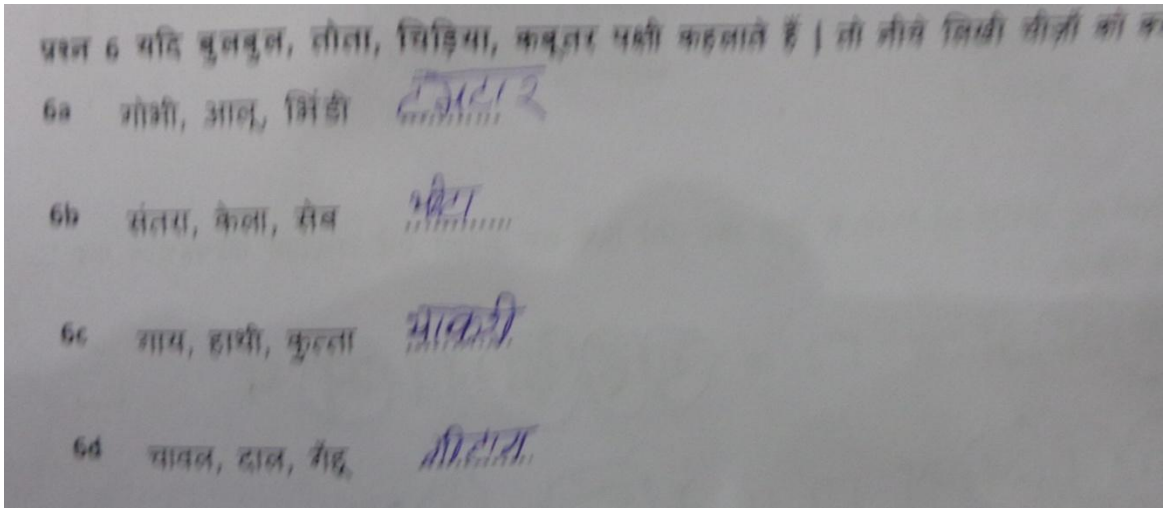

कुछ लोगों ने ऐसा भी लिखा है:

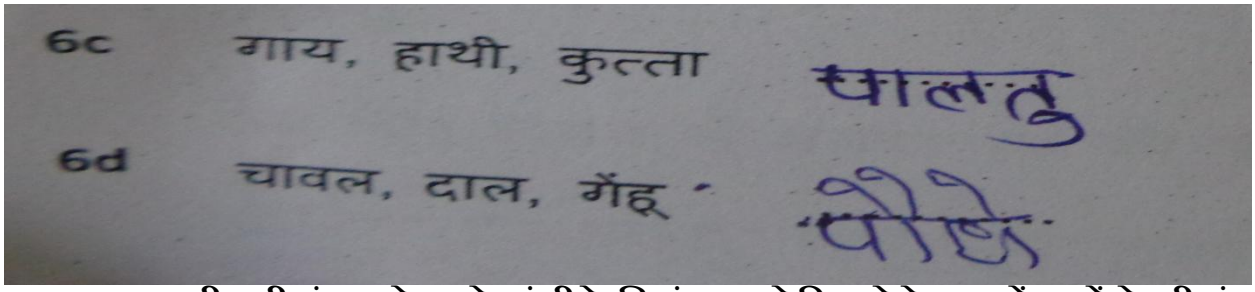

उदाहरण चार: दी गयी संख्या के आगे एवं पीछे की संख्या को लिखने के प्रश्न में बच्चों ने बड़ी संख्या में केवल पहले एवं आखिरी अंक को आधार बनाकर उत्तर लिख दिया है |

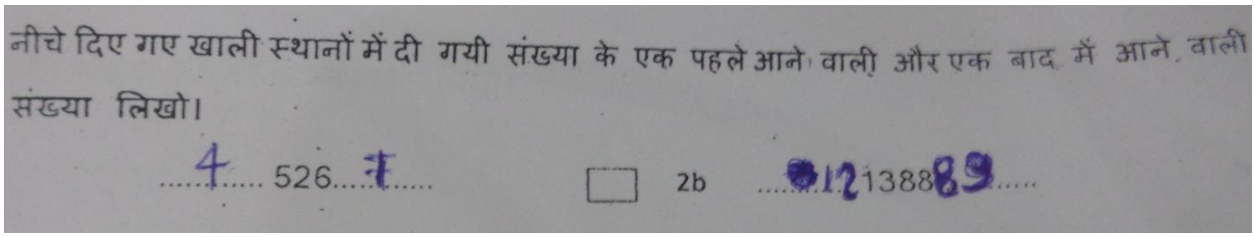

उदाहरण पांच: नीचे दिए गए चित्रों को देखकर वे क्या कर रहे हैं लिखने संबंधी पत्र में सरपंच के अखबार पढ़ रहे हैं, उत्तर की अपेक्षा है | पर चित्र में सरपंच अखबार पढ़ने के साथ साथ चाय भी पीते दिख रहे हैं | बच्चे ने इसे लिखने की कोशिश की है | इसी प्रकार गाय के घास खाने को खाय लिखने के पीछे शायद यह कारण हो सकता है कि बच्चे स्थानीय भाषा में खाने को खाय कहते हैं | बच्चे जैसा बोलते हैं वैसे ही लिखने का प्रयास करते हैं |

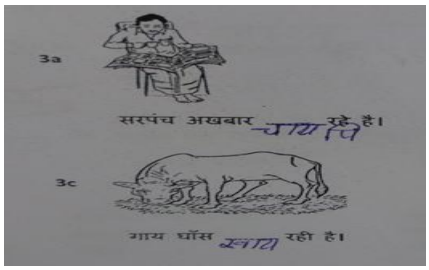

उदाहरण छः- इस उदाहरण में बच्चे ने शिक्षिका व्दारा पत्र लिखना दिखाया गया है पर लिखते समय शिक्षिका पत्र पढ़ भी तो रही है | अब बच्चा यदि रस्सी कूदने को उड़ने जैसा कल्पना करे तो आप क्या कर सकते हैं ?
बच्चों को कल्पना शक्ति का विकास करने के पर्याप्त अवसर देना चाहिए | ऐसे मौकों पर डांट-डपट नहीं करना चाहिए |

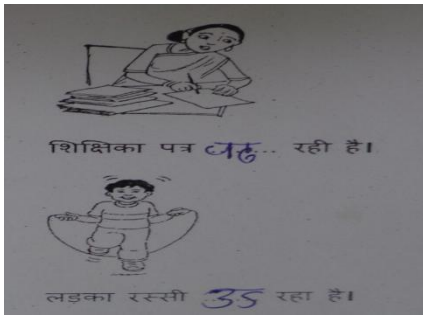

उदाहरण सात: नीचे दिए उदाहरण में बच्चे ने गणित के सवाल सही तरीके से हल किए हैं परन्तु उत्तर वाली जगह में उत्तर नही लिखा है | उत्तर शिक्षक ने बच्चे की जानकारी एवं समझ के लिए लिख दिया है ताकि आगे से वह यः गलती न करे |

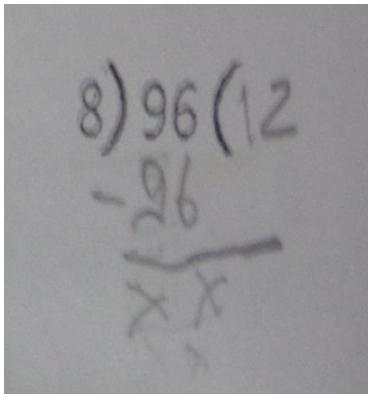

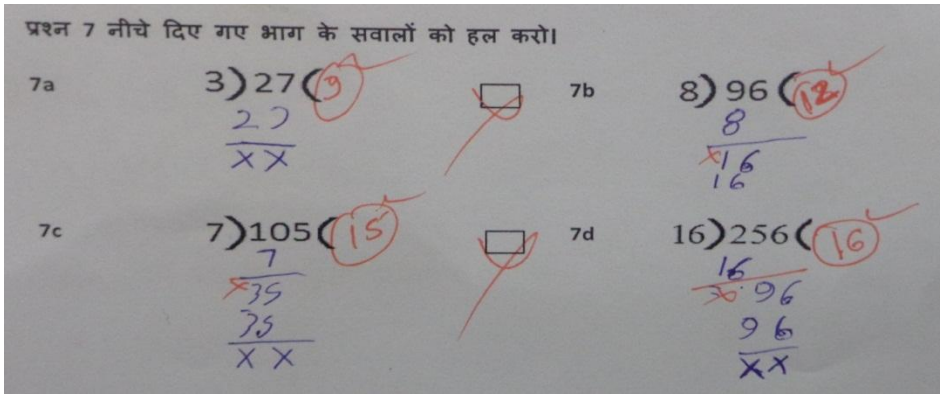

ऊपर दिए गए उदाहरण में ९६ को ८ से भाग देने वाले सवाल में बच्चे को उत्तर मालूम है इसलिए उसने सीधा उत्तर लिख दिया | ऐसे में शिक्षक को क्या करना चाहिए, आपस में चर्चा करें |

उदाहरण आठ: बोली गयी संख्या को सुनकर ध्यान से लिखने वाले सवाल में यदि बच्चों ने ऐसा लिखा है तो सबसे पहले वे किस संख्या के लिए ऐसा लिख रहे हैं और सिखाने में कहाँ गलती हो रही है ? ऐसी गलतियों को दूर करने के लिए क्या करना चाहिए ? चर्चा करें और सुधार हेतु योजना बनाएं |

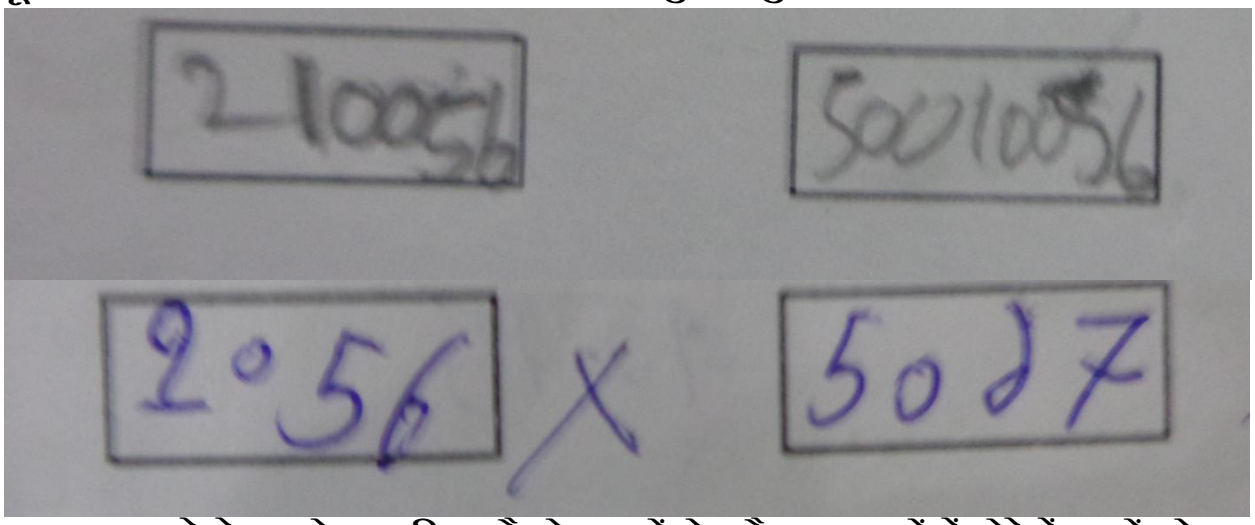

ऊपर एक बच्चे ने छः को उल्टा लिखा है | ऐसा क्यों होता है? कुछ बच्चों में छोटे में अक्षरों को उल्टा दिखने या लिखने की समस्या होती है | यदि ऐसे बच्चों की समय में पहचान हो जाए तो अभ्यास से उनकी इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है | इस बीमारी को डिस्लेक्सिया कहते हैं | "तारे जमीन पर" फिल्म आपको यदि याद हो तो उस फिल्म में बच्चे को इसी बीमारी से ग्रसित दिखाया गया है | क्या आप संकुल में ऐसी कुछ अच्छी फिल्में देखने की व्यवस्था कर सकते हैं ?

उदाहरण नौ: नीचे दिए है उदाहरण में क्या बच्चे को सवाल समझ में नहीं आया ? वह बेटी को बालिका, शेर को पुरुष, रानी को महिला लिख रहा है |

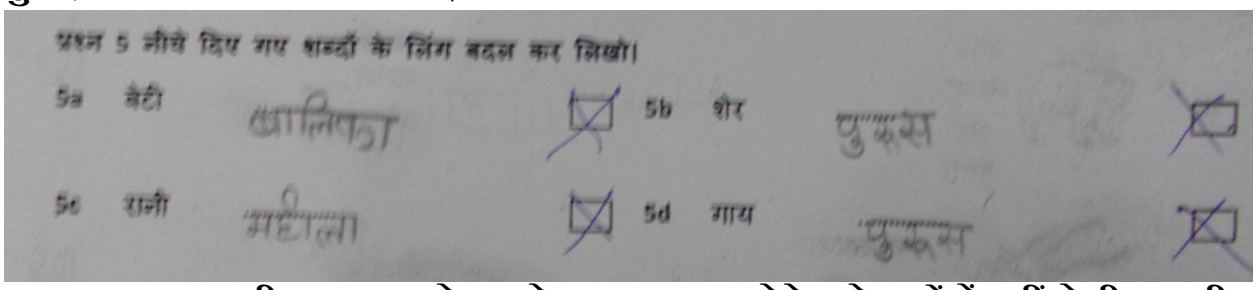

उदाहरण दस: कहानी पढ़कर अपने मन से समझ कर उत्तर देने वाले प्रश्नों में कहीं से भी कुछ भी वाक्य जिसमे प्रश्न के कुछ शब्द लिखे दिख जाएं, उसे वैसा का वैसा उतार लो | अपना काम हो जाएगा | ऐसे बच्चों को कैसे समझाएंगे ?

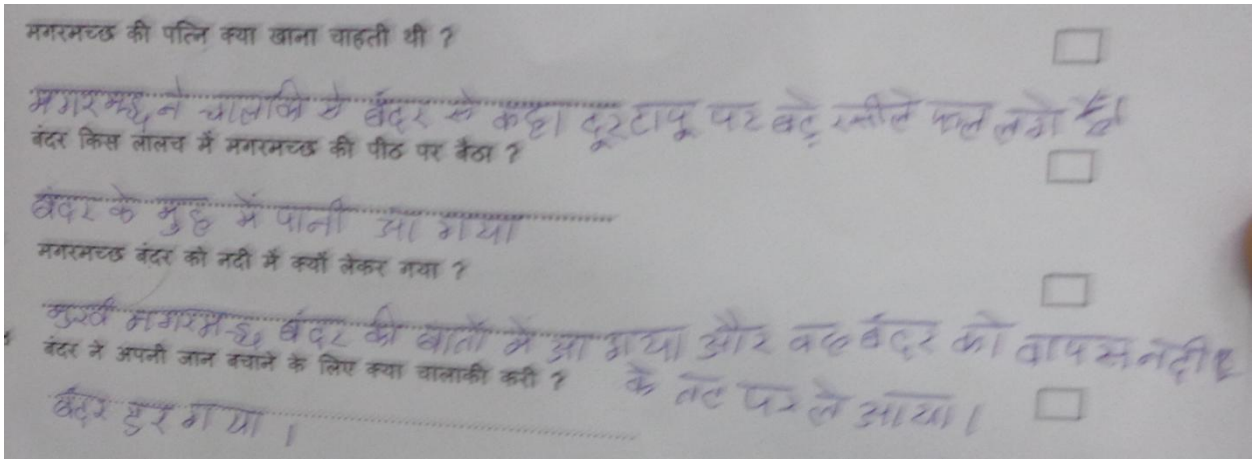

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस 10 फरवरी 2016

- कृमि नियंत्रण की दवाई बच्चो के बेहतर स्वास्थ्य, पोषण, स्कूलों में बच्चो की उपस्थिति में बढ़ोतरी और बेहतर जीवन में मदद करती है ।
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास की साझेदारी से 10 फरवरी को 6 से 19 साल के सभी बच्चो को स्कूलों और आंगनवाडी केन्द्रो में कृमि नियंत्रण की दवाई खिलाई जाएगी ।
- यह कार्यक्रम 16 जिलो (बस्तर, बीजापुर, दंतवेड़ा, कोण्डागांव, कर्वधा कांकेर, कोरिया, कोरबा, नारायणपुर, राजनांदगांव, सुकमा, जांजगीर–चांपा, बालोद, बेमेतरा, दुर्ग, जशपुर) में हो रहा है।

ध्यान दे:

1

6–19 साल के बच्चों के लिए 1 पूरी गोली दें

2

बच्चों को गोली चबाकर ही खाने का निर्देश दें। पीने का पानी साथ रखे

3

कृमि मुक्ति दिवस पर दवाई देने के साथ-साथ उपस्थिति रजिस्टर में हर बच्चे के नाम के सामने सही का एक (✓) निशान लगाएं

4

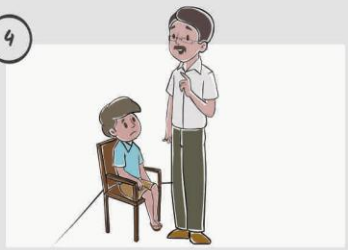

जो बच्चे बीमार हैं या कोई अन्य दवाई ले रहें हैं उन्हें कृमि संक्रमण की दवाई न दें

5

जो बच्चे राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस पर किसी भी कारण छूट जाते है, उन्हें दवाई मॉप-अप दिवस पर दे। बच्चे के नाम के सामने रेजिस्टर पर सही के दो (✓✓) निशान लगाए

मॉप अप दिवस 15 फरवरी को है

6

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस और मॉप-अप दिवस पर लगाए ✓ और ✓✓ की संख्या अलग-अलग संकलित कर हैडमास्टर को बची हुई दवाई के साथ दें

महत्वपूर्ण निर्देश

- सुनश्चित करें कि राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस किट की पूरी सामग्री आपको प्रशिक्षण के समय प्राप्त हुई है:

दवाई + हैंडआउट + आई ई सी + रिपोर्टिंग फॉर्म = राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस किट

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आपका और मितानिन का सहयोग जरुरी है ।
बच्चो के उज्वल भविष्य के लिए इस कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक और निर्देश अनुसार करे ।

याद रखें

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस **10 फरवरी 2016**

मॉप-अप दिवस **15 फरवरी 2016**

स्कूल रिपोर्टिंग फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि **19 फरवरी 2016**

कृमि नियंत्रण कार्यक्रम को पूर्ण जानकारी के लिए प्रशिक्षण में दिए गए हैंडआउट को ध्यान से पढे । हैंडआउट का पहला पृष्ठ आपकी जानकारी के लिए निचे दिया गया है ।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस

शिक्षक के लिए हैंडआउट

हाल ही में, स्वाति की माँ ने देखा कि उसे लगातार पेट में दर्द रहता है

दस्त और कमज़ोरी के कारण वह रोज़ाना स्कूल भी नहीं जा पाती

कृमि संक्रमण के मुख्य बिंदु:

कृमि क्या हैं?

कृमि परजीवी होते हैं। जो जीवित रहने के लिए मनुष्य की आंत में रहते हैं।

बच्चों में आम तौर पर तीन तरह के कृमि पाए जाते हैं

राउंड कृमि

व्हिप कृमि

हुक कृमि

कृमि संक्रमण चक्र

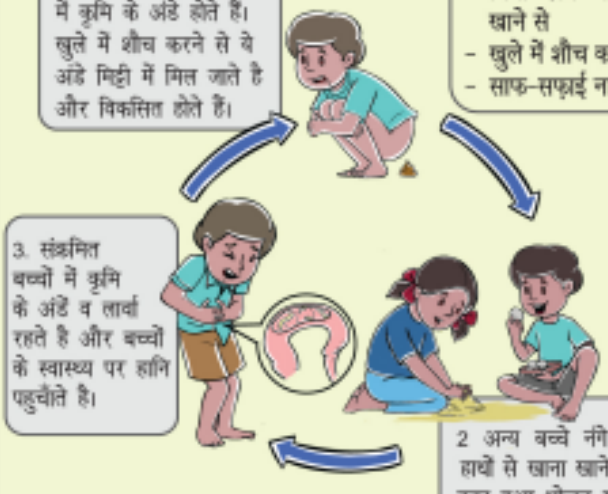

कृमि कई कारणों से बच्चे के पेट में पहुंच सकते है-

- नंगे पैर खेलने से
- बिना हाथ धोये खाना खाने से
- खुले में शौच करने से
- साफ-सफ़ाई ना रखने से

कृमि संक्रमण के हानिकारक प्रभाव-

- खून की कमी (एनीमिया)
- कुपोषण
- भूख न लगना
- थकान और बैचेनी
- पेट में दर्द, मितली, उल्टी और दस्त आना
- मल में खून आना

एल्बेंडॉजोल की गोली कृमि नियंत्रण में मदद करती है

बच्चों को कृमि नियंत्रण के फायदे-

सीधे फायदे

- खून की कमी में सुधार
- बेहतर पोषण स्तर

अनुमानिक फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद
- स्कूल और आंगनवाड़ी केन्द्रों में उपस्थिति तथा सीखने की क्षमता में सुधार लाने में मदद
- भविष्य में कार्यक्षमता और औसत आय में बढ़ोतरी
- समुदाय में अन्य सदस्यों को भी कृमि नियंत्रण की दवाई का लाभ मिलता है क्योंकि वातावरण में कृमि की संख्या कम हो जाती है

10 फरवरी 2016

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस

इस दिन 6–19 वर्ष आयु के सभी बच्चों को एल्बेंडॉजोल दवाई आंगनवाड़ी केन्द्रों और स्कूलों में निःशुल्क दी जाएगी।